मङ्गलम्

ईशावास्यिमदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥1॥

(यजुर्वेद: - 40/1) ईशोपनिषद्

भावार्थ: सृष्टि में ये सब जो कुछ भी जड़-चेतन पदार्थ हैं वे ईश्वर से आवासित या आच्छादित हैं अर्थात् सभी में ईश्वर का निवास है। अत: सभी लोग उस परमेश्वर के द्वारा दिए गए पदार्थों का ही परस्पर त्याग की भावना से भोग करें। किसी अन्य व्यक्ति के धन का लोभ न करें।।।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥2॥

(ऋग्वेद: - 10/192/3)

भावार्थ: इस मंत्र में मानवमात्र के लिए प्रेरणा दी गयी है कि सभी के विचार समान हों। समिति अर्थात् सभाएँ और उनमें बैठकर लिए गए निर्णय समान हों। सभी के मन अर्थात् संकल्प तथा चित्त अर्थात् चिंतन एक जैसे हों। मैं तुम सब को एक ही विचार से युक्त करता हूँ तथा सभी के लिए एक ही जैसे (समान भाव से) हिव अर्थात् अन्न आदि भोग्य पदार्थ प्रदान करता हूँ।

अभिप्राय यह है कि परमात्मा एवं प्रकृति की ओर से सभी को उपभोग के साधन समान भाव से दिए गए हैं। अत: विचारों की एकता, भोगों की समानता तथा समरसता में ही सुख है।।2।।

द्यौः शान्तिरन्तिरक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिःशान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥३॥

(यजुर्वेद: 36/17)

भावार्थ: द्युलोक शांतिदायक हो, अन्तरिक्षलोक तथा पृथ्वीलोक शांतिदायक हों, जल एवं ओषिधयाँ तथा वनस्पतियाँ शांति देने वाली हों, सभी देवता अथवा सृष्टि की दिव्य शिक्तयाँ शांति देने वाली हों, ब्रह्म अर्थात् महान् परमेश्वर या उसका दिया हुआ ज्ञान वेद, शांतिदायक हो, सम्पूर्ण चराचर जगत् शांतिप्रद हों, सब जगह शांति ही शांति हो, ऐसी शांति मुझे प्राप्त हो और वह सदा बढ़ती ही रहे।

अभिप्राय यह है कि सृष्टि के कण-कण में शांति हो। सभी पदार्थ सभी के लिए सुख-शांतिदायक हों। समस्त पर्यावरण ही हमारे लिए सुखद एवं शांतिप्रद हो। सुख-शांति की यह धारा कभी कम न हो, सदा बढ़ती ही रहे।।3।।



प्रथमः पाठः

कुशलप्रशासनम्

प्रस्तुत अंश वाल्मीकिरामायण के अयोध्याकाण्ड के सौवें सर्ग से संकलित है। भगवान् श्रीराम चित्रकूट में वनवास कर रहे हैं। भ्रातृविरह से पीड़ित भरत श्रीराम से मिलने आए हैं। श्रीराम भरत से मिलने के बाद उनसे कुशल-प्रश्न करते हैं। इस प्रकरण में भरत राम से राज्यव्यवस्था संचालन संबंधी ऐसे अनेक प्रश्न करते हैं जिनसे राजनीति विज्ञान पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

श्रीराम ने भरत से प्रश्न किया है कि क्या उन्होंने मिन्त्रयों की नियुक्ति शास्त्रोक्त अपेक्षाओं के अनुरूप की है? क्या वे मन्त्रणा शास्त्रविधि से करते हैं? क्या उनका वेतन भुगतान समय से किया जाता है? यह पाठ्यांश प्रशासनिक व्यवस्था की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हीं बिंदुओं पर प्रस्तुत पाठ्यांश में विशद विवेचन किया गया है।

जिटलं चीरवसनं प्राञ्जिलं पिततं भुवि। ददर्श रामो दुर्दर्शं युगान्ते भास्करं यथा॥१॥ कथञ्चिदभिविज्ञाय विवर्णवदनं कृशम्। भ्रातरं भरतं रामः पिरजग्राह पाणिना॥२॥ आग्नाय रामस्तं मूर्डिन पिरष्वज्य च राघवम्। अङ्के भरतमारोप्य पर्यपृच्छत सादरम्॥३॥ किच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः। कुलीनाश्चेिङ्गतज्ञाश्च कृतास्ते तात मित्रणः॥४॥ मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवित राघव!। सुसंवृतो मित्रधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः॥5॥ कच्चित्रिद्रावशं नैषि कच्चित्कालेऽवबुध्यसे। कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम्।।6।। कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह। कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति॥७॥ कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम्। क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव!॥८॥ कच्चित्सहस्रान्मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम्। पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निःश्रेयसं महत्॥९॥ एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः। राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम्॥१०॥ कच्चिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः। जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्ते तात योजिता:॥11॥ अमात्यानुपधातीतान्पितृपैतामहाञ्छुचीन्। श्रेष्ठाञ्छेष्ठेषु कच्चित्त्वं नियोजयसि कर्मस्।।12॥ कच्चिद्धष्टश्च शूरश्च धृतिमान्मतिमाञ्छुचिः। कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः॥13॥ कच्चिद्बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्। सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे॥१४॥ कालातिक्रमणाच्चैव भक्तवेतनयोर्भृताः। भर्तुरप्यतिकृप्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान्स्मृतः॥15॥



जटिलम् - जटा: सन्ति यस्य सः तम्, जटा + इलच्, जटा धारण किये हुए। चीरवसनम् - चीरं वसनं यस्य सः तम्, पेड़ के छाल के बने वस्त्र पहने हुए।

प्राञ्जलिम् - नमस्कार करने वाले।

ददर्श - दृश् + लिट् लकार, प्र० पु० ए० व०, देखा।

दुर्दर्शम् - द्रष्टुम् अशक्यम्, दुःखपूर्वक देखा जाने योग्य।

अभिविज्ञाय - अभि + वि उपसर्ग ज्ञा धातु + क्त्वा > ल्यप्, पहचानकर।

विवर्णवदनम् - विवर्णं वदनं यस्य सः तम्, फीकेमुख वाला।

परिजग्राह - परि + ग्रह् + लिट्, प्र० पु० ए० व०, ग्रहण किया। परिष्वज्य - परि + ष्वस्ज् + क्त्वा > ल्यप्, आलिङ्गन करके।

आघ्राय - आ + घ्रा + क्त्वा > ल्यप्, सुँघकर।

आरोप्य - आ + रुह् + णिच् + क्त्वा > ल्यप्, बैठाकर।

पर्यपुच्छत - परि + पुच्छ् + लङ् (आत्मनेपद, आर्षप्रयोग), पूछा।

आत्मसमाः - आत्मना समा:, अपने समान।

श्रुतवन्तः - श्रुत + मतुप् पुं० प्र० पु० ब० व०, शास्त्र पढे हुए।
जितेन्द्रियाः - जितानि इन्द्रियाणि यै: ते, इन्द्रियों को वश में करने वाले।

मन्त्रः - मन्त्रणा।

विजयमूलम् - विजयः मूले यस्य तत्, विजय प्रदान करने वाला।

शास्त्रकोविदै: - शास्त्रस्य कोविदै:, षष्ठी-तत्पुरुष, शास्त्र के ज्ञाताओं के द्वारा।

अवबुध्यसे - जागते हो।

मन्त्रयसे - मन्त्रणा करते हो।

विनिश्चित्य - वि + निस् + चि + क्त्वा > ल्यप्, निश्चय करके।

दीर्घयसि - विलम्ब करते हो।

अर्थकृच्छ्रेषु - अर्थस्य कृच्छ्रेषु, षष्ठी-तत्पुरुष, धन की कठिनाइयों में।

निःश्रेयसम् - निःशेषेण श्रेयांसि यस्मिन् तत्, कल्याण।

अमात्यः - मन्त्री। विचक्षणः - निपुण।

प्रापयेत् - प्र + आप् + णिच्, विधिलिङ्, प्र० पु० ए० व०, प्राप्त

कराए।

जघन्यः - निंदनीय।

एषि - प्राप्त होते हो। नियोजयसि - नियुक्त करते हो।

दक्षः - चतुर, निपुण।

भक्तवेतनयोः - भोजन और वेतन के।

उपधातीतान् - उपधायाः अतीतान्, राजाओं के द्वारा किये गये मंत्रियों के

परीक्षण से शुद्ध होकर निकले हुए।

धृष्ट: - किसी के दबाव में न आने वाला।

6 भास्वती

🖚 🍣 सन्धिवच्छेद: 🍣 🖚

रामो दुर्दर्शम् = राम: + दुर्दर्शम्। **युगान्ते** = युग + अन्ते।

कथञ्चिदभिविज्ञाय = कथम् + चित् + अभिविज्ञाय।

रामस्तम् = राम: + तम्।

पर्यपृच्छत = परि + अपृच्छत (आर्षप्रयोग)। **कश्चिदात्मसमाः** = कः + चित् + आत्मसमाः।

कुलीनाश्चेद्भितज्ञाश्च = कुलीना: + च + इङ्गितज्ञा: + च

मन्त्रिधुरैरमात्यैः = मन्त्रिधुरैः + अमात्यैः। कच्चिन्निद्रावशम् = कत् + चित् + निद्रावशम्।

 नैषि
 = न + एषि।

 नैक:
 = न + एक:।

 हार्थर्कृच्छ्रेषु
 = हि + अर्थकृच्छ्रेषु।

 कुर्यानि:श्रेयसम्
 = कुर्यात् + नि:श्रेयसम्।

किंच्यद्धृष्टश्च = किंच्यत् + धृष्ट: + च। **मितमाञ्छुचि:** = मितमान् + शुचि:। **कुलीनाश्च** = कुलीना: + च।

भृत्याश्च = भृत्या: + च।

कालातिक्रमणाच्चेव = काल + अतिक्रमणात् + च + एव।

भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति = भर्तु: + अपि + अतिकुप्यन्ति

सोऽनर्थः = सः + अनर्थः

1. संस्कृतेन उत्तरं देयम्

- (क) अयं पाठ: कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलित:?
- (ख) जटिल: चीरवसन: भुवि पतित: क: आसीत्?
- (ग) राम: कं पाणिना परिजग्राह?
- (घ) भरतं कः अपृच्छत्?
- (ङ) राज्ञां विजयमूलं किं भवति?
- (च) राज्ञः कृते कीदृशः अमात्यः क्षेमकरः भवेत्?
- (छ) सेनापतिः कीदृग् गुणयुक्तः भवेत्?

| | (ज) | (ज) बलेभ्य: यथाकालम् किं दातव्यम्? | | | | |
|----|---|--|------------|---|--|--|
| | (झ) | मन्त्र: कीदृश: भवति? | | | | |
| | (স) | (ञ) मेधावी अमात्य: राजानं काम् प्रापयेत्? | | | | |
| 2. | रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम् | | | | | |
| | (क) |) राम: ददर्श दुर्दर्शं युगान्ते """" यथा। | | | | |
| | (ख) | अङ्के आरोप्य राम: सादरं पर्यपृच्छत। | | | | |
| | | किच्चत् काले? | | | | |
| | | | | कुर्यात्। | | |
| | (ङ) | श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कचि | वत् एवं "" | नियोजयसि। | | |
| 3. | सप्रसङ्गं मातृभाषया व्याख्यायेताम् | | | | | |
| | (क) | (क) मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव! | | | | |
| | (ख) | (ख) कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावित! | | | | |
| 4. | प्रथम | प्रथमनवमश्लोकयोः स्वमातृभाषया अनुवादः क्रियताम् | | | | |
| 5. | अधो | अधोलिखितपदानाम् उचितमर्थं कोष्ठकात् चित्वा लिखत | | | | |
| | (क) | दुर्दर्शम् | = | ••••• | | |
| | | परिष्वज्य | = | ••••• | | |
| | (ग) | आघ्राय | = | | | |
| | (ঘ) | मूर्धिन | = | ••••• | | |
| | (ङ) | नि:श्रेयसम् | = | ••••• | | |
| | (핍) | विचक्षण: | = | ••••• | | |
| | | बलस्य | = | ••••• | | |
| | (आलिंगन करके), (सूँघकर), (कठिनाई से देखने योग्य), (निपुण) | | | | | |
| | (सेना का), (सिर में), (कल्याण को) | | | | | |
| 6. | विपरीतार्थमेलनं क्रियताम् | | | | | |
| | | एक: | शनै: | | | |
| | | | मूर्ख: | | | |
| | | पण्डित: | लघु | | | |
| | | महत् | बहव: | | | |
| 7. | सन्धिविच्छेदः क्रियताम् | | | | | |
| | यथा- | - कुलीनश्च | = | कुलीन: + च | | |
| | | भृत्याश्च | = | *************************************** | | |

8 भास्वती

> धृष्टश्च अनुरक्तश्च शूरश्च

अधोलिखितेषु शब्देषु प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत 8.

पतितम्, आघ्राय, मन्त्रिण:, पण्डिता:, मेधावी, दातव्यम्, स्मृत:।



(क) रामायण-परिचयः

महर्षिवाल्मीकिविरचिते रामायणाख्ये महाकाव्ये अयोध्यानुपते: दशरथस्य पुत्रस्य रामस्य चरित्रं विस्तरेण वर्णितम्। महाकाव्यमिदं सप्तकाण्डेषु विभक्तम्। यथा -

बालकाण्डम्, अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्धाकाण्डम्, सुन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम् उत्तरकाण्डञ्चेति।

(ख) भावविस्तारः

राजा

कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिं च देशकालौ च तत्त्वत:। कुरुते धर्मसिद्धयर्थं विश्वरूपं पुन: पुन:॥ यस्य प्रसादे पद्मा श्रीविजयश्च पराक्रमे। मृत्युश्च वसित क्रोधे सर्वतेजोमयो हि स:।। (मनुस्मृति: 7/10, 11)

मन्त्री

मौलाञ्छास्त्रविद: शूरांल्लब्धलक्षान्कुलोद्भवान्। सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्।। (मनुस्मृति: 7/54)

अमात्य:

अमात्यमुख्यं धर्मज्ञं प्राज्ञं दान्तं कुलोद्गतम्। स्थापयेदासने तस्मिन्खिननः कार्ये क्षणे नृणाम्।। (मनुस्मृति: 7/141)

वेतनम्

कति दत्तं हि भृत्येभ्यो वेतने पारितोषिकम्। तत्प्राप्तिपत्रं गृह्णीयात् दद्याद्वेतनपत्रकम्।। सैनिकाः शिक्षिता ये ये तेषु पूर्णा भृतिः स्मृता। व्युहाभ्यासे नियुक्ता ये तेष्वर्धाम्भृतिमावहेत्।।

(शुक्रनीति:)